अथ

इन्द्राक्षीस्तोत्रं

प्रारभ्यते ।

KRi-248

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीनर्मदा-
देव्यै नमः ॥ ॐअस्य श्रीइन्द्रा-
क्षीस्तोत्रमंत्रस्य पुरंदर ऋषिः ॥
अनुष्टुप् छंदः॥ इन्द्राक्षी देवता ॥
महालक्ष्मी बीजम् ॥ भुवनेश्वरी

शक्तिः ॥ भवानीति कीलकम् ॥
मम सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे श्रीइ-
न्द्राक्षीवरप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे
विनियोगः ॥ अथ न्यासः ॥
इन्द्राक्षी अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥

महालक्ष्मी तर्जनीभ्यां नमः ॥
माहेश्वरी मध्यमाभ्यां नमः ॥
अंबुजाक्षी अनामिकाभ्यां न-
मः ॥ कात्यायनी कनिष्ठिका-
भ्यां नमः ॥ कौमारी करतल-

करपृष्ठाभ्यां नमः ॥ एवं हृद-
यादिः ॥ इंद्राक्षी हृदयाय नमः॥
महालक्ष्मी शिरसे स्वाहा ॥
माहेश्वरी शिखायै वषट् ॥ अंबु-
जाक्षी कवचाय हुम् ॥ कात्या-

यनी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ कौ-
मारी अस्त्राय फट् ॥ ॐ ह्रां हृद-
याय नमः ॥ ॐ ह्रीं शिरसे स्वा-
हा॥ ॐ ह्रूं शिखायै वषट् ॥ ॐ ह्रैं
कवचाय हुम् ॥ ॐ ह्रौं नेत्रत्र-

याय वौषट् ॥ ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ॥ अथ दिग्बंधः ॥ प्राच्यै दिशे नमः ॥ इंद्राय नमः ॥ आ-ग्नेय्यै दिशे नमः॥ अग्नये नमः ॥ याम्यायै दिशे नमः ॥ यमाय

नमः॥ नैर्ऋत्यै दिशे नमः॥ नैर्ऋ-
त्याय नमः ॥ प्रतीच्यै दिशे
नमः॥ वरुणाय नमः॥ वायव्यै
दिशे नमः॥ वायवे नमः॥ उदी-
च्यै दिशे नमः॥ कुबेराय नमः॥

ईशान्यै दिशे नमः ॥ ईश्वराय
नमः ॥ ऊर्ध्वायै दिशे नमः ॥
ब्रह्मणे नमः ॥ अधरायै दिशे
नमः ॥ अनन्ताय नमः ॥ ॐ भूः
ॐ भुवः ॐ स्वरोमिति दिग्बंध-

नम् ॥ अथ ध्यानम् ॥ इन्द्राक्षीं
द्विभुजां देवीं पीतवस्त्रद्वयान्वि-
ताम् ॥ वामहस्ते वज्रधरां दक्षि-
णेन वरप्रदाम् ॥ १ ॥ इन्द्राक्षीं
सहस्रयुवतीनानालङ्कारभूषि-

ताम् ॥ प्रसन्नवदनांभोजामप्स-
रोगणसेविताम् ॥ २ ॥ अथ
मंत्रः ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं इंद्राक्षी
क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ स्वाहा ॥ अष्टो-
त्तरशतं जप्त्वा सर्वसिद्धिप्रदाय-

कम् ॥ इन्द्र उवाच ॥ इन्द्राक्षी
नाम सा देवी दैवतैः समुदाहृता
॥ गौरी शाकंभरी देवी दुर्गाना-
म्नीति विश्रुता ॥ १ ॥ कात्या-
यनी महादेवी चन्द्रघंटा महा-

तपा ॥ सावित्री सा च गायत्री
ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी ॥ २ ॥
नारायणी भद्रकाली रुद्राणी
कृष्णपिंगला ॥ अग्निज्वाला
रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी

॥ ३ ॥ मेघश्यामा सहस्राक्षी विकटांगी जलोदरी ॥ महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला ॥ ४ ॥ अद्रिजा भद्रजा नंदा रोग-हंत्री शिवप्रिया ॥ शिवदूती क-

राली च प्रत्यक्षपरमेश्वरी ॥ ५॥
इंद्राणी इन्द्ररूपा च इन्द्रशक्ति-
परायणा ॥ सदासंमोहिनी देवी
सुन्दरी भुवनेश्वरी ॥ ६ ॥ एका-
क्षरी परब्रह्मस्थूलसूक्ष्मप्रव-

ह्निनी ॥ वाराही नारसिंही च
भीमा भैरवनादिनी ॥७॥ श्रुतिः
स्मृतिर्धृतिर्मेधा विद्या लक्ष्मीः
सरस्वती ॥ अनंता विजया प-
र्णामानस्तोकापराजिता ॥८॥

भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यं-
बिका शिवा ॥ शिवा भवानी
रुद्राणी शंकरार्द्धशरीरिणी॥१॥
एतैर्नामपदैर्दिव्यैः स्तुता शक्रेण
धीमता ॥ अयुरारोग्यमैश्वर्य्यं

ज्ञानवित्तयशोबलम् ॥ १० ॥ श-
तमावर्त्तयद्यस्तु मुच्यते व्या-
धिबधनात् ॥ आवर्तेन सहस्रं
तु लभते वांछितं फलम् ॥ ११ ॥
राजानं च समाप्नोति इन्द्राक्षीं

नात्र संशयः ॥ नाभिमात्रे जले
स्थित्वा सहस्रपरिसंख्यया
॥ १२ ॥ जपेत्स्तोत्रमिदं मंत्रं
वाचासिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥ सायं-
प्रातःपठेन्नित्यं षण्मासैः सिद्धि-

रुच्यते ॥ १३ ॥ संवत्सरमुपा-
श्रित्य सर्वकामार्थसिद्धये ॥
अनेन विधिना भक्त्या मंत्र-
सिद्धिः प्रजायते ॥ १४ ॥ संतुष्टा
च भवेद्देवी प्रत्यक्षं संप्रजायते ॥

अष्टम्यां च चतुर्दश्यामिदं स्तोत्रं पठेन्नरः ॥ १५ ॥ धावत-स्तस्य नश्यंति विघ्नसंख्या नसंशयः ॥ कारागृहे यदा बद्धो मध्यरात्रेस्तदा जपेत् ॥ १६ ॥

दिवसत्रयमात्रेण मुच्यते नात्र संशयः ॥ सकामो जपते स्तोत्रं मंत्रपूजाविचारतः ॥ १७ ॥ पंचाधिकैर्दशादित्यैरियं सिद्धि-स्तु जायते ॥ रक्तपुष्पै रक्तवस्त्रै

रक्तचंदनचर्चितैः ॥१८॥ धूप-
दीपैश्च नैवेद्यैः प्रसन्ना भगवती
भवेत्॥ एवं संपूज्य इन्द्राक्षीं
इन्द्रेण परमात्मना ॥ १९ ॥
वरं लब्ध्वादितेः पुत्रान् भग-

वत्या: प्रसादत: ॥ २० ॥ हरि: ॐ तत्सत् ॥

इति श्रीइन्द्रोक्तं इन्द्राक्षी-
स्तोत्रं संपूर्णम् ॥ शुभमस्तु ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
" लक्ष्मीवेंकटेश्वर " छापाखाना-कल्याण-मुंबई

आहि-

१

जाहिरात.

स्तोत्रपाठग्रन्थाः ।

७१५ श्रीरामरक्षास्तोत्र–श्रीराममहिम्नस्तोत्र–विष्णुपञ्जरस्तोत्र–श्रीवेंकटेशाष्टकस्तोत्रेति स्तोत्रचतुष्टयम्	क	०–३	०–॥
७१६ श्रीरामबाराखडी और राममंगल	डा	०–२	०–॥
७१७ नारायणकवच भाषाटीका	क	०–२	०–॥
७१८ श्रीरामसन्मङ्गलस्तोत्र	क	०–१	०–॥
७१९ श्रीबदरीनारायणस्तोत्र शालग्रामस्तुतिः द्वारकानायकस्तुतिश्च	क	०–३	०–॥

रात.

१

७२० श्रीवेंकटेशक्षमात्रयस्त्रिंशच्छ्लोकी भाषाटीका. क०- १०-॥

७२१ श्रीकृष्णाष्टक सटीक .... क ०-१ ०-॥

७२२ अष्टादशश्लोकीगीता भाषाटीका क ०-१ ०-॥

७२३ अजबकुंज विहारी अष्टक भा० टी० क ०-२ ०-॥

७२४ अन्नपूर्णास्तोत्र भा०टी० .... क ०-१ ०-॥

७२५ आदित्यहृदय बडा .... क ०-४ ०-॥

७२६ आदित्यहृदय छोटा अक्षर .... क ०-१॥ ०-॥

७२७ आदित्यहृदय भाषाटीका.... .... क ०-४ ०-॥

७२८ आदिव्रतकथा भाषाटीका .... क ०-२ ०-॥

७२९ आपदुद्धारक स्तोत्रसमुदाय .... क ०-३ ०-॥

७३० इंद्राक्षीस्तोत्र .... क ०-१ ०-॥

७३१ उपमन्युकृत शिवस्तोत्र भा०टी० क ०-१ ०-॥

जाहि-

२

७३२ कमलनेत्रस्तोत्र	क	०-१	०-॥
७३३ कलिसंतारणोपनिषत् भाषाटीका	क	०-४	०-॥
७३४ कलिमाहात्म्य संस्कृतटीका और भा०टी०	क	०-२	०-॥
७३५ कलिसंतारणोपनिषत् मूल	क	०-१	०-॥
७३६ कालिकासहस्रनाम	क	०-४	०-॥
७३७ कालीकवच भा०टी०	क	०-१	०-॥
७३८ कुशापमार्जन स्तोत्र	क	०-१	०-॥
७३९ केशवस्तव भाषाटीका	क	०-२	०-॥
७४० कृपायतनकृष्णकारुण्याष्टक भाषाटीका	क	०-१	०-॥
७४१ गङ्गालहरी मूल	क	०-१॥	०-॥
७४२ गंगालहरी सान्वय भाषाटीका	क	०-४	०-॥
७४३ गणेशसहस्र नामावली....	क	०-२	०-॥

रात.

२

७४४	गङ्गास्थितिनिर्णय भाषाटीका	क	०-२	०-॥
७४५	गणपतिस्तोत्र तथा सरस्वतीस्तोत्र	क	०-१	०-॥
७४६	गणेशाष्टकस्तोत्र, गंगाष्टकस्तोत्रसहित	क	०-१	०-॥
७४७	गंगासहस्रनाम मोटे अक्षरका	क	०-३	०-॥
७४८	गंगाष्टक	क	०-॥	०-॥
७४९	गायत्रीपटल लघु	क	०-१॥	०-॥
७५०	गायत्रीपुरश्चरण	क	०-२	०-॥
७५१	गायत्रीपञ्चाङ्ग	क	०-१२	०-२
७५२	गोपालसहस्रनामावली	क	०-२	०-॥
७५३	गोपालसहस्रनाम भाषाटीका	क	०-७	०-१
७५४	गोविंदनामगीता	क	०-८	०-१
७५५	गोपालपटल	डा	०-३	०-॥

७५६	गोपालसहस्रनाम राधास्तोत्र स छोटाअक्षर	क	०-२	०-॥
७५७	गोपालसहस्रनाम बडा अक्षर खुला	क	०-३	०-॥
७५८	गोपालसहस्रनाम गुटका रेशमी	क	०-५	०-॥
७५९	चतुःश्लोकीभागवत और सप्तश्लोकीगीता	क	०-॥	०-॥
७६०	चण्डिकास्तोत्र	ख	०-१॥	०-॥
७६१	चर्पटपञ्जरी मूल	क	०-॥	०-॥
७६२	चर्पटपञ्जरी भाषाटीका	क	०-१	०-॥
७६३	चोवीसगायत्री	डा	०-४	०-॥
७६४	जगन्नाथाष्टक	क	०-॥	०-॥
७६५	ज्वरस्तोत्र भा० टी०	क	०-॥	०-॥
७६६	तुलसीकवच	ख	०-२	०-॥

७६७ तुलसीसहस्रनाम	मुं	०-१॥	०-॥
७६८ दत्तकारुण्यलहरी संस्कृत	क	०-१	०-॥
७६९ दत्तकारुण्यलहरी भाषाटीका	क	०-२	०-॥
७७० दारिद्र्यमोचनाष्टक	क	०-१	०-॥
७७१ दुर्गासप्तटीका	ख	३-०	०-६
७७२ दुर्गासप्तशती शान्तनवीटीकासहित	क	१-४	०-२
७७३ दुर्गासप्तशती भाषाटीका शान्तनवी टीकाके अनुकूल	क	१-०	०-२

इति

इन्द्राक्षीस्तोत्रं

समाप्तम् ।